निक़ाह ख़ुतबा

اَلْحَمْدُ لِلهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهْ وَنُؤْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَلُ عَلَيْهِ وَنَعُوذُ بِاللهِ مِنْ شُرُورِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِاٰتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَهْدِهِ اللهُ فَلاَ مُضِل لَهُ وَمَنْ يُضْلِلْهُ فَلاَ هَادِيَ لَهُ وَنَشْهَدُ اَنْ لا اِلَهَ اِلا اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ
وَنَشْهَدُ اَن مُحَمدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ اَما بَعْدُ فَاَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَيْطَانِ الرجِيمِ بِسْمِ اللهِ الرحْمَانِ الرحِيْمِ

मैं पहले क़ुरआन करीम की वह आयत-ए-मुकररमा पेश करता हूँ जो हुज़ूर अकदस मुहम्मद मुस्तफा (स) निकाह के दौरान तिलावत किया करते थे।

ऐ लोगो, अपने रब्ब का तक़्वा इख़्तियार करो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उस का जोड़ा बनाया और फिर उन दोनों में से मरदों और औरतों को बकसरत फैला दिया। और अल्लाह से डरो जिस के नाम के वास्ते से तुम एक दूसरे से माँगते हो और रिहमों (के तकाज़ों) का भी ख़याल रखो। यकीनन अल्लाह तुम पर निग्रान है।	يَأَيهَا لناسُ تقُواْ رَبكُمُ لذِى خَلَقَكُمْ من نفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَث مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنسَآءً وَتقُواْ للهَ لذِى تَسَآءَلُونَ بِهِ وَلأَرْحَامَ إِن للهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيباً	4:2

इस आयत से यह पता चलता है कि जो भी काम हम करें वह तक़्वा पर मब्नी होना चाहिए, तक़्वा पर मब्नी जो भी चीज़ हो वह आसमान की बुलंदी पर जा उठता है और उसका फल हमेशा मिलता है और जब हम तक़्वा को छोड़ोगे वह ज़मीन पर गिर पड़ेगा और उधर ही ख़तम हो जाएगा।

इस आयत का दूसरी पहलू यह है कि इसमे रिहमी रिश्ते का ख़याल रखने का हुक्म दिया गया है। जब दो जान एक हो जाता है, दोनों ख़ान्दान एक हो जाता है, और लड़की का माँ बाप लड़के का माँ बाप बन जाता है और लड़के का माँ बाप लड़की का मा बाप बन जाता है और दोनों को एक दूसरे का माँ बाप को अपना समझकर दोनों का मुश्किलात दूर करने की कोशिश करनी चाहिए।

शादी एक ख़ुशी का मौका है और हर एक ख़ुशी में एक शुकर का हिस्सा भी है। हम ईद के दिन पहले नमाज़ पढ़कर ही ख़ुशिया मनाते है। लेकिन शादी में ऐसे नमाज़ का हुक्म तो नही है। बल्कि, ख़ुदा के बाद अपने माँ बाप को याद करके उन केलिए ख़िदमत करने का मौका तो शादी के बाद ही मिलता है। बचपन से वे हमें पाल पोसकर बढ़ा किया, हमारे हर ज़रूरतों का ख़याल रखकर उनकी ख़ुशियाँ छोड़कर वह हमारे लिए ज़िंदगी गुज़ारी। उनके इहसानात का बदला तो हम नहीं दे सकते लेकिन जब हम ख़ुशियाँ मना रहे हैं, उनके ज़िंदगी में भी उस ख़ुशी की जलकियाँ लाने की कोशिश करना हमारा फ़र्ज़ बनता है। माँ बाप को भूलने वाले नाफरमान औलाद की तरह हम को न बनना चाहिए। इस ज़िमन क़ुरआन क़रीम का इर्शाद है किः -

और तेरे रब्ब ने फैसला सादिर कर दिया है के तुम उस के सिवा किसी की इबादत न करो और वालिदैन से इहसान का सुलूक करो। अगर उन दोनों में से कोई एक तेरे पास बुड़ापे की उमर को पहुँचे या वह दोनों ही, तो उन्हें नर्मी और इज्ज़त के साथ मुख़ातिब कर।	وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّآ إِيَّاهُ وَبِٱلْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَٰنًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِندَكَ ٱلْكِبَرَ أَحَدُهُمَآ أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُل لَّهُمَآ أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُل لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا	17:24
और उन दोनों के लिए रहम से इजज़ का पर छुका दे और कह	وَٱخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ ٱلذُّلِّ مِنَ	17:25

कि ऐ मेरे रब्ब, उन दोनों पर रहम कर जिस तरह उन दोनों ने बचपन में मेरी तरबियत की।	وَقُل رب رْحَمْهُمَا لرحْمَةِ كَمَا رَبَيَانِى صَغِيراً	

माँ तो अपने औलाद को दस महीने पेट में पालती है और जो भी ख़िदमत माँ करती है ज़ाहिरी होती है और सब के नज़र में पड़ते है। लेकिन बाप अपने औलाद का बोझ बीस साल से ज़्यादा उठाता है। उनका खाना पीना, कपड़ा, पढ़ाई, रहन सहन, सब का बोझ बाप के कंधों पर पढ़ते है। बाप का ख़िदमत तो मख़फी होती है और जवानी में उसका मुशकिलात का पता नहीं चलता। हमें औलाद होने के बाद और ख़ुद मुश्किलात सहने के बाद ही पता चलेगा कि औलाद का बोझ कितना भारी है। इसलिए बाप का ज़िकर ख़ुदा के ज़िकर के साथ ख़ुदा ने जुड़ा दियाः -

अल्लाह का ज़िक्र करो जिस तरह तुम अपने आबा का ज़िक्र करते हो, बल्कि उस से भी बहुत ज़्यादा ज़िकर।	وَ ذْكُرُواْ لله كَذِكْرِكُمْ آبَآءكُمْ أَوْ أَشَد ذِكْراً	2:201

इसलिए वालिदैन को ग़म देकर उनके मर्ज़ी के ख़िलाफ शादी करना गुनाह है। गुनाह करने के बाद तौबा ही बाक़ी रहता है। जो भी ऐसी शादी करता है उनको चाहिए कि ख़ुदा से बहुत इस्तिग़फार करे, अपने वालिदैन से माफी माँगे और उनके ग़म मिटाने के लिए बहुत ख़िदमत करे, बहुत ख़िदमत करे, बहुत ख़िदमत करे, ताकि अपने वालिदैन की दिल से उनके लिए दुआएँ निकले।

शुकर करने की आदत एक बहुत बड़ी निअ़मत है अगर यह जज़बा हमारे दिल में पैदा हो जाए तो फिर कोई चीज़ की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि हमें ख़ुदा का यह वादा है कि अगर हम शुकर करें तो ख़ुदा हम को और ज़्यादा निअ़मत अ़ता करेगा।

और जब तुम्हारे रब्ब ने यह ऐलान	وَإِذْ تَأَذنَ رَبكُمْ لَئِن	14:08

किया कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें बड़ाऊँगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो यक़ीनन मेरा अ़ज़ाब बहुत सख़्त है।	لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ	

शुकर के बाद सच्चाई का एक बहुत एहम मरतबा है। जो भी सिलसिला, अच्छाई का हो या बुराई का, वह आगे ले जाने के लिए सच्चाई बहुत ज़रूरी है। एक **Partnership Business** को आप देखिए। एक **Partner** उसमे धोखेबाज़ी से काम लेगा तो वह **business** उधर ही ख़तम हो जाएगा। शादी भी एक एहद है, वह सच्चाई के साथ पूरा करना दोनों की ज़िम्मेदारी है। ख़ुदा तआ़ला की इरशाद है कि

ऐ वे लोगों जो ईमान लाए हो, अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और साफ सीधी से बात किया करो।	يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا	33:71

पस बुतों की पलीदी से इहतिराज़ करो और झूठ कहने से बचो।	فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ	22:31

क़ुरआन करीम से जो पहली सज़ा बताया गया है वह झूठ बोलने की वजह से है।

और उन के लिए बहुत दर्दनाक अजाब (मुक़रर) है बवजह उसके कि वह झूठ बोलते थे।	وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ	2:11

जो भी झूठ बोलेगा ख़ुदा तआ़ला उसको आख़िर ज़लील करके ही छोड़ेगा। इसलिए जो भी अपना इज्ज़त को अपने काबू में रखना चाहता है तो फिर सच्छाई उसकी ज़िंदगी की हमसफर साथी बनाना हैं।

हमारे हर कदम में ख़ुदा तआ़ला को याद रखना चाहिए और उससे दुआ करते रहना चाहिए। शादी के मौके पर भी कुछ ऐसे दुआएँ है कि जो हमें याद करके उस पर अ़मल भी करना है।

एक हदीस में रसूलुल्लाह (स) ने फरमाया जब दुल्हा पहली बार दुल्हन से मिलता है, उसके सर पर हाथ रखकर यह दुआ करें, "ऐ ख़ुदा, हमारे रिश्ते को हमेशा कायम कर के रखना" तो फिर उन दोनों का रिश्ते को ख़ुदा हमेशा मज़बूत रखेगा उसमे जो भी मुश्किलात आ जाए।
हर एक शख़्स में अच्छाई भी होती है और बुराई भी होती है। और ऐसी बुराई जो इस वक़्त मख़फी है बाद में ज़ाहिर होगा और बाद में हमें पता चलेगा। इसलिए बाद में आने वाली बदआख़लाक से बचने के लिए ख़ुदा तआ़ला ने यह दुआ सिखाता हैः -

हमारे रब्ब, हमें अपने जीवन साथियों और अपने औलाद से आँखों की ठंडक अ़ता कर और हमें मुत्तक़ियों का इमाम बना दे।	رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا	25:75

यह दुआ बचपन से लेकर ज़िन्दगी की आख़िर दम तक जारी रखना है और अजवाज के लफ़्ज़ में हमारे रिशतेदार, साथी, दोस्त सब शामिल है।

जो पहली आयत मैं आपके सामने तिलावत की थी उसके बाद यह आयत-ए-करीमा आती है।

और यतामा को उन के अमवाल दो और ख़बीस चीज़ें पाक चीज़ों के	وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا	4:3

तबादिला में न लिया करो और उन के अमवाल अपने अमवाल से मिलाकर न खा जाया करो। यकीनन यह बहुत बड़ा गुनाह है।	تَتَبدلُواْ لْخَبِيثَ بِالطيبِ وَلاَ تَأكُلُواْ أموَالَهُمْ إِلَىٰ أموَالِكُمْ إِنَهُ كَانَ حُوباً كَبِيراً	

दुल्हन जब माँ बाप को छोड़कर दूसरे घर में आती है वह भी एक यतीमा की तरह होती है और अपने साथ कुछ ज़ेवरात भी लेकर आती है। उसके माल का नाजायिज़ फायदा उठाना बहुत बुरी काम है और वह ख़ुदा के नज़दीक गुनाह है।

ऐसे भी माँ बाप होते है जब अपनी बेटी घर से फारिग़ होती है तो यह समझते हैं कि लड़की तो चली गयी और उसे कुछ देने की ज़रूरत नही है। फिर सारे माल किसी दूसरे बेटे या बेटियों को दे देते है। अपने औलाद की दर्मियान इनसाफ के साथ पेश आना वालिदैन का भी फर्ज़ बनता है जैसे ख़ुदा ने हुक्म दी हो। और जो भी इस में घड़बड़ करेगा, उनसे ख़ुदा ने बहुत बड़ी ताकीद की है। यह माँ बाप को हमेशा याद रखना चाहिए।

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफरमानी करे और उस की हदूद से तजावुज़ करे तो वह उसे एक आग में डालेगा जिस में वह एक लम्बे अरसे तक रहने वाला होगा और उस के लिए रुसवा कर देने वाला अ़जाब (मुक़र्रर) है।	وَمَن يَعْصِ للهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَد حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَاراً خَالِداً فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مهِينٌ 4:15

अभी मैं शादी की असली मक़सत की तरफ लौटता हूं। शादी के असली मक़सत के बारे में ख़ुदा तआला का फरमान है किः -

और उस के निशानात में से (ये भी) है कि उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिंस में से जोड़े बनाए ताकि तुम उन की तरफ तस्कीन	وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُم مِنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجاً لِتَسْكُنُواْ

إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُم مَّوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ 30:22	(हासिल करने) के लिए जाओ और उस ने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत और रहमत पैदा कर दी। यक़ीनन उस में ऐसी क़ौम के लिए जो ग़ौर व फिक्र करते हैं बहुत से निशानात हैं।

आपस में मुहब्बत पैदा करना ही शादी का मक़सत है। इसमें दोनों का ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी है। मुहब्बत तो अकेला पैदा नहीं हो सकता, उसके लिए दोनों का कोशिश होना बहुत ज़रूरी है। आपस में दोनों को ऐसा ख़याल रखना चाहिए कि, एक दूसरे को भोज बनने के बिना सहारा बन जाए। शादी से पहले से भी इस मक़सत के लिए दुआएँ करनी चाहिए और यह दुआएँ हमें सिखाए गए हैंः -

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا 25:75	ऐ हमारे रब्ब, हमें अपने जीवन साथियों और अपने औलाद से आखों की ठंडक अता कर और हमें मुत्तक़ियों का इमाम बना दे।

शादी के बाद औलाद पैदा होते है। नेक औलाद तो ख़ुदा की एक निअ़मत है। नेक औलाद की तमन्ना काफी नहीं, वह पूरा होने के लिए दुआओं का भी ज़रूरत है। अक्सर लोग यह ख़याल करते हैं कि जब हम दौलत कमा लिया तो फिर सब कुछ पा लिया और ख़ुदा को भूलना शुरू करते हैं। फिर जब उसको औलाद की तरफ़ से टक्कर आ जाती है तो फिर आँख खुल जाती है। जब हम ख़ुदा को भूलते है इसका मतलब यह है कि हमने अपने आप को भुला दिया या खो दिया। हमारा दौलत से बच्चे को खाना पीना और ज़िंदगी का दूसरी ख़ुशियाँ तो दे सकते है लेकिन बच्चे को नेक नहीं बना सकते। इसलिए दुआ की ज़रूरत पढती है। यह दुआएँ हमेशा याद कर के ज़िंदगी का एक हिस्सा बनाना चाहिए।

ऐ मेरे रब्ब, मुझे अकेला ना छोड़ और तू सब वारिसों से बहतर है।	رَب لاَ تَذَرْنى فَرْداً وَأنتَ خَيْرُ لْوَارِثِينَ21:90

अकेलापन औलाद न होने पर भी और होने पर भी महसूस हो सकता है। औलाद होने के बाद बिगड़ भी जाते हैं। ऐसे बहुत मा। बाप है जो औलाद होने के बाद भी बुड़ापे में अकेले पड़ते है। इसलिए यह दुआ ज़िंदगी की हर वक़्त में जारी रकना है।

और ऐ हमारे रब्ब, हमें अपने दो फरमांबरदार बन्दे बनादे और हमारे ज़ुरिरयत में से भी अपने एक फरमांबरदार उम्मत (पैदा कर दे)। और हमें अपनी इबादतों और क़ुरबानियों के तरीक़ सिखा और हम पर तू बह क़ुबूल करते हुए झुके जा। यक़ीनन तू ही बहुत बह क़ुबूल करने वाला (और) बार बार रह़म करने वाला है।	رَبنَا وَ جْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِيَتِنَآ أُمةً مسْلِمَةً لكَ وَأرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَآ إنكَ أنتَ لتوابُ لرحِيمُ2:129+

ऐ मेरे रब्ब, मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना और मेरी नसलों को भी। हमारे रब्ब, और मेरी दुआ क़ुबूल कर। ऐ हमारे रब्ब, मुझे बख़्श दे और मेरे वालिदें को भी और मोमिनों को भी जिस दिन हिसाब बरपा होगा।	رَب جْعَلْنِى مُقِيمَ لصلاَةِ وَمِن ذُرِيَتِى رَبنَا وَتَقَبلْ دُعَآءِ رَبنَا غْفِرْ لِى وَلِوَالِدَى وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ لْحِسَابُ14:42+

हमारे बचपन में या जवानी में वालिदैन की क़ुरबानी का कोई पता नहीं चलेगा। जब हमें औलाद हो और ज़िंदगी की मुश्किलातें सामने आ जाएँ तो फिर माँ बाप का क़ुरबानी का पता चलता है। यह पूरी तौर पर समझने के लिए चालीस साल तक इन्तिज़ार करना पढ़ता है। इसलिए क़ुरआन करीम में यह दुआ सिखाया गया है किः -

وَوَصَّيْنَا لِإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَاناً حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهاً وَوَضَعَتْهُ كُرْهاً وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلاثُونَ شَهْراً حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحاً تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ46:16	और हम ने इन्सान को ताकीदी नसीहत की के अपने वालिदैन से एहसान करे। उसे उस की माँ ने तक्लीफ के साथ उठाए रखा और तक्लीफ़ ही के साथ उसे जनम दिया। और उस के हमल और दूध छुड़ाने का ज़माना तीस महीने हैं। यहाँ तक के जब वह अपनी पुख़्तगी की उमर को पहुँचा और चालीस साल का हो गया तो उस ने कहा ए मेरे रब्ब, मुझे तौफीक़ अता कर कि मैं तेरी इस निअ़मत का शुकरिया अदा कर सकूँ जो तू ने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर की और ऐसे नेक अअमाल बजा लाऊँ जिन से तू राज़ी हो और मेरे लिए मेरी ज़ुरिरयत की भी इसलाह कर दे। यक़ीनन मैं तेरी ही तरफ रुजूअ करता हू और बिला ुब्हा मैं फरमांबरदारों में से हूँ।

बच्चों को दौलत का ख़ुशी देना असली मुहब्बत नहीं है। असली मुहब्बत तो अपने आप को अपने औलाद को, रिश्तेदार को जहन्नम की आग से बचाना है। हमारा

कोशिश तो यह होना चाहिए कि हामरा सब रिश्तेदार को, साथियों को जहन्नम से बचाएँ।

ऐ लोगों जो ईमान लाए, अपने आप को और अपने अहले अयाल को आग से बचाओ	يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قُوٓاْ أَنفُسَكُمۡ وَأَهۡلِيكُمۡ نَارٗا 66:07

इसलिए पहले अपने आप को नेक बनना पड़ेगा और ख़ुद दूसरे को नेक करना पड़ेगा। जब भी हमारे औलाद जहन्नम की तरफ कदम बड़ाता है उसको रोकना हमारी ज़िम्मेदारी बनती है।

ख़ुदा तआ़ला मर्द और औरत में जज़ा देने में कोई फरक नहीं किया। जो भी अच्छा काम करेगा ईमान के साथ, औरत हो या मर्द, उन दोनों को एक जैसा जज़ा मिलेगा और उन से किसी तरह का ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

और मरदों और औरतों में से जो नेक आमाल बजा लाए और वह मोमिन हो तो यही वह लोग हैं जो जन्नत में दाख़िल होंगे और वह खजूर की गुटली के सुराख़ के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किए जाऐंगे।	وَمَن يَعۡمَلۡ مِنَ لصَٰلِحَٰتِ مِن ذَكَرٍ أَوۡ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤۡمِنٞ فَأُوْلَٰٓئِكَ يَدۡخُلُونَ لۡجَنَّةَ وَلَا يُظۡلَمُونَ نَقِيرٗا 4:125

लेकिन ख़ुदा तआ़ला ने क़ियादत को मर्द के ऊपर दिया है। यह इसलिए किः -

मर्द औरतों पर निगरान है उस फ़ज़ीलत की वजह से जो अल्लाह ने उन में से बअ़ज को ब़अ़ज पर बख़शी है और इस वजह से भी के वह अपने अमवाल (उन पर) ख़र्च	لرجَالُ قَوَّٰمُونَ عَلَى لنسَآءِ بِمَا فَضَلَ للَّهُ بَعۡضَهُمۡ عَلَىٰ

بَعْضٍ وَبِمَآ أَنفَقُواْ مِنْ أَمْوَٰلِهِمْ فَٱلصَّٰلِحَٰتُ قَٰنِتَٰتٌ حَٰفِظَٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ ٱللَّهُ 4:35	करते हैं। पस नेक औरतें फरमांबरदार और ग़ैब में भी उन चीज़ों की हिफाज़त करने वाली होती है जिन की हिफाज़त की अल्लाह ने ताकीद दी है।

यह आयते करीमा से ज़ाहिर है कि बीबी के ऊपर ख़र्च करना मर्द का ज़िम्मेदारी है। बीवी का जो भी माल हो वह अपना ही दौलत है। ख़ावन्द को उसपर कोई हक़ नहीं हैं, मगर बीवी अपनी खुशी से उसमें से देते है तो वह ले सकते है लेकिन ज़बरदस्ती करना मरद का हक़ नहीं है।

وَءَاتُواْ ٱلنِّسَآءَ صَدُقَٰتِهِنَّ نِحْلَةً فَإِن طِبْنَ لَكُمْ عَن شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيٓـًٔا مَّرِيٓـًٔا 4:5	और औरतों को उन के मेहर दिली ख़ुशी से अदा करो। फिर अगर वह अपनी दिली ख़ुशी से उस में से कुछ तुम्हें देने पर राज़ी हो तो उसे बिला तरदुद शौक़ से खाओ।

इस आयत में जो भी महर हम लड़की को देते है वह महर वापस लेकर खाने की इजाज़त नहीं दी गयी। फिर लड़की की कमाई कैसे खावन्द उनके मर्ज़ी के खिलाफ खा सकते है? लड़की को पढ़ाने में उसकी माँ बाप बहुत खर्च करते है और उसकी कमाई में माँ बाप का भी एक हक़ होता है। लेकिन ऐसे शौहर भी है जो लड़की की कमाई को पूरे कबज़े में लेते हैं और उसकी माँ बाप को कुछ देने की इजाज़त भी नहीं देते। यह ऐसे लोग है जो जहन्नम का रस्ता ख़ुद अपने आप के लिए चुन लिया है।

शादी की ज़िंदगी में मुहब्बत भी होती है और कभी कभी जगड़ा भी होती है। लेकिन एक सवाल उठता है, जगड़े में किसका साथ देना है। वालिदैन का साथ रहना या बीवी के साथ या ख़ावन्द के साथ। इसके जवाब से क़ुरआन करीम यह कहता है कि इन्साफ का साथ देना है।

يَا أَيهَا لذِينَ آمَنواْ كُونواْ قَوامِينَ بِلْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلهِ وَلْوْ عَلىٰ أَنفُسِكُمْ أَوِ لْوَالِدَيْنِ وَ لأَقْرَبِينَ إِن يَكُنْ غَنِيّاً أَوْ فَقِيراً وَ للهُ أَوْلىٰ بِهِمَا 4:136	ऐ वे लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह की ख़ातिर गवाह बनते हुए इंसाफ को मज़बूथी से क़ायम करने वाले बन जाओ ख़्वाह ख़ुद अपने ख़िलाफ गवाही देनी पडे या वालिदैन और क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ जो कोई अमीर हो या ग़रीब दोनो का अल्लाह ही बहतरीन निगहबान है।

शादी के बाद बच्चा पैदा होता है और सवाल यह उठता है लड़का होना चाहिए या लड़की। आम तौर पर ज़्यादातर लोग लड़के को पसंद करते हैं लेकिन ख़ुदा ने लड़की को ज़्यादा पसंद किया है।

يَهَبُ لِمَن يَشَآءُ إِنَاثاً وَيَهَبُ لِمَن يَشَآءُ لذكُورَ 42:50	जिसे चाहता है लड़कियाँ अ़ता करता है और जिसे चाहता है लड़के अ़ता करता है।
أَوْ يُزَوجُهُمْ ذُكْرَاناً وَإِنَاثاً وَيَجْعَلُ مَن يَشَآءُ عَقِيماً إِنهُ عَلِيمٌ	या कभी उन्हें बाहम मिला जुला देता है। कुछ नर और कुछ मादह। नीज़ जिसे चाहे उसे बाँझ बना देते हैं। यक़ीनन वह दायमी

इल्म रखने वाला (और) दायमी क़ुदरत वाला है।	قَدِيرٌ 42:51

तो अगर लड़की भी मिले तो ज़्यादा ख़ुशी की बात है और मायूस होने की कोई ज़रूरत नहीं है। लड़की होना ख़ुदा का फ़ज़ल है और जन्नत में जाने के लिए ख़ुदा ने हम को लड़कियों की ज़रिये आसानी मोहय्या की है।

एक औरत से ख़ुदा तआला क्या तवक्कुल रखता है। वह इसी आयत में बताया गया हैः -

ऐ नबी, जब मोमिन औरतें तेरे पास आएं (और) उस (अमर) पर तेरी बैयत करे, कि वह किसी को अल्लाह का शरीक नहीं टहराएगी और ना ही चोरी करेगी और ज़िना करेगी और न अपनी औलाद को क़तल करेगी और ना ही (किसी पर) कोई झूठा इल्ज़ाम लगाएगी जिसे वह अपने हाथों और पाओं के सामने घुडलें और न ही मअ़रूफ (अमूर) में तेरी नाफरमानी करेगी तो तू उन की बैअ़त क़ुबूल कर और उन के लिए अल्लाह से बख़्शिश तलब कर। यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला और बार बार रहम करने वाला है।	يٰأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰى أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ 20:31

इधर चोरी करने का क्या मतलब है? ख़ावन्द जब खर्च के लिए पैसा देता है उसमें से चोरी करती है। औरत को यह चाहिए कि वह शौहर से मुहब्बत करें और

अपनी ज़रूरियात उनसे बताएँ, तो ज़रूर ख़ावन्द अपनी खुशी से उसकी सारी मुरादें पूरी करेगा। अक्सर जो चोरी करती हैं ऐसे लड़कियाँ घमंडी होती है और ख़ावन्द से शोर मचाकर बातें करती है।

बीबी के नाम के साथ शोहर का नाम मिलाने का रिवाज़ इसलामी रिवाज़ नहीं है और यह रिवाज़ ख़ुदा तआ़ला का इर्शाद के खिलाफ है।

उन को उन के आबा के नाम से पुकारा करो। यह अल्लाह के नज़दीक इंसाफ के ज़्यादा क़रीब है।	ٱدْعُوهُمْ لِآبَآئِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِندَ ٱللَّهِ	33:06

- باب في تغيير الأسماء

4948 ـ حدثنا عمرو بن عون قال: أخبرنا، ح وحدثنا مسدد قال: ثنا هشيم، عن داود بن عمرو عن عبد الله بن أبي زكريا، عن أبي الدرداء قال:
قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "إنكم تُدعون يوم القيامة بأسمائكم وأسماء آبائكم فأحسنوا أسماءكم".

यह हदीस अबू दावूद से ली गयी है।

अबू र्ददा बयान करते है कि रसूल (स) ने फरमाया, कियामत के दिन आप अपने नाम और अपने बाप के नाम के साथ पुकारा जाएंगें। इसलिए अपने आप के लिए अच्छा नाम चुना किया करो।

अगर बीबी से या ख़ावन्द से एसा कोई बद अखलाक़ है तो वह सहने में भी ख़ुदा तआ़ला जज़ा रखा है और एसा कोई मुश्किलात हो तो ख़ुदा को याद करके सहना भी अच्छी बात है।

एक हदीस में रसूल करीम (स) फरमाते हैः

जो बीबी का बदअखलक सहते है उसको एसा जज़ा मिलेगा जैसा अय्यूब नबी (अ) को दिया गया था, और जो ख़ावन्द अपना बीबी का बदअखलाक सहते है उसको एसा जज़ा मिलेगा जैसा फिरऔन की बीबी हः आसिया को मिला था।

जो भी खुशियायं हमें इस ज़िंदगी से मिलता है वह सब खुदा से ही मिलती है। शादी भी एक ऐसा ही मौक़ा है। लेकिन उस वक्त खुदा का हुक्म को भूल जाना नाशुक्री बन जाता है। हम नमाज़ को छोड़ते हैं। रात देर तक बातें करके सुबह नहीं उठते और फजर की नमाज़ खो बैढते हैं। खुदा तआला नमाज़ के बारे में बताता है किः -

यक़ीनन नमाज़ मोमिनों पर एक वक़्ते मुक़र्रर की पाबंदी के साथ फर्ज़ है।	فَإِنَّ لصلاَةَ كَانَتْ عَلَى لْمُؤْمِنِينَ كِتَاباً مَوْقُوتاً 4:104

नमाज़ सही वक़्त पर अदा करना मोमिन का काम है और दूसरी जगह यह फरमाया गया है किः -

(अपनी) नमाज़ों की हिफाज़त करो बिलखुसूस मरकज़ी नमाज़ की और अल्लाह के हज़ूर फरमांबरदारी करते हुए खड़े हो जाओ।	حَافِظُواْ عَلَى لصلَوَاتِ و لصلاَةِ لْوُسْطَى وَقُومُواْ لِلهِ قَانِتِينَ 2:239

शादी भी हमारे ज़िंदगी का एक वुस्ता है और उसीके दौरान नमाज़ को हरगिज़ छोड़ना नहीं चाहिए और नमाज़ को सही वक़्त पर अदा करना हमारा कोशिश होना चाहिए।

अभी शादी के बारें में औइ कुछ हदीसें पढ़कर सुनाऊँगा **...(by H. KM 1V R.A)**

हज़रत इब्न उमर (र) कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह (स) को यह फरमाते हुए सुना कि तुम मैं हर एक निगरान है और अपनी रअिय्यत के बारे में पूछा जाने वाला है। चुनांचे इमाम भी निगरान है और अपनी रअिय्यत के बारे में पूछा जाने वाला है। और औरत अपने ख़ाविन्द के घर की निगरान है और अपनी रअिय्यत के बारे में पूछी जाने वाली है। (बुख़ारी कितावुल वसाया) यानी वह बच्चे जो घर में परवरिश पाते हैं और दूसरे हुकूक़ जो हैं वह उन की निगरान है और इस बारे में वह ख़ुदा तआला के हुज़ूर जवाबदह होगी।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ, عِنِ النِبي □ قَالَ: (تُنْكَحُ المَرْأَةُ لأَرْبَعٍ: لِمَالِهَا ولِحَسَبِهَا وَجَمَالِهَا وَلِدِيْنِهَا, فَاظْفَرْ بِذاتِ الدينِ, تَرِبَتْ يَداكَ)

हज़रत अबू हुरैराह (र) से रिवायत है वह रसूलुल्लाह (स) से बयान करते है कि आप ने फरमाया औरत से मालदारी, ख़ादानी वजाहत, हुसन व जमाल और दीनदारी के बाइस निकाह किया जाता है । तेरे दोनों हाथ ख़ाक आलूद हो तुझे कोई दीनदार औरत हासिल करना चाहिए।

हज़रत सअ़द बिन वक़ास (र) रिवायत करते हैं - आप (र) ने बताया कि रसूलुल्लाह (स) ने फरमाया ख़ुदा की रज़ा चाहते हुए जो ख़र्च करोगे उस पर तुम्हें ज़रूर जज़ा मिलेगा। यहाँ तक कि उस लुक़्मा पर भी जो तुम अपनी बीवी के मुंह में डालते हो। (बुख़ारी किताबुल ईमान)

मुसलिम किताबुल ज़कात में है हज़रत अबू हुरैरा (र) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (स) ने फरमाया अगर एक दीनार तू ख़ुदा की राह में ख़र्च करे और एक दीनार तू गरदन आज़ाद करवाने पर ख़र्च करे, और एक दीनार किसी मिस्कीन पर ख़र्च करे

और एक दीनार तू अपने अहल पर ख़र्च करे तो उन में सेब से ज़्यादा अजर उस दीनार का होगा जो तू ने अपने अहल व अ़याल पर ख़र्च किया होगा।

तिरमिज़ी किताबुल निकाह से यह रिवायत क़ैस बिन त़लक की ली गयी है जो अपने वालिद त़लक बिन अली (र) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (स) ने फरमाया जब कोई मर्द अपनी बीवी को अपनी ज़रूरत के लिए बुलाए तो उसे चाहिए कि वह उस के पास चले आए ख़्वाह वह तनूर पर खड़ी हो। (सुनन तिरमिज़ी किताबुल निकाह) तनूर पर खड़ी होने का मतलब यह है कि ख़्वाह रोटी जल रही हो और यह ना कहे कि मैं इन्तिज़ार कर रही हूँ रोटियाँ पका रही हूँ मगर अगर ख़ावन्द को ज़रूरत है तो उस का पहला हक़ है उस की आवाज़ पर लब्बैक कहे।

मुसनद अहमद में यह रिवायत है हज़रत अब्दुल रह़मान (र) मरवी है कि आहज़ूर (स) ने फरमाया कि जब कोई औरत पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ती है और रमज़ान के रोज़े रखती है और अपनी इसमत की हिफाज़त करती है और अपने ख़ावन्द की फरमांबरदारी करती है तो उसे कहा जाता है कि जन्नत के जिस दरवाज़े से तू चाहे दाख़िल होजा। (مسند احمد. مسند العشرة المبشرة بالجنة) अब यह जन्नत के दरवाज़े के मुतअल्लिक़ भी बार बार वज़ाहत की गयी है कोई ऐसा गेट नहीं लगा हुआ वहाँ या कई गेट नहीं लगे हुए कि जहाँ से मर्ज़ी दाख़िल हो जाओ। मुराद यह है कि अपनी पसंद ख़ुदा तआ़ला की जन्नत में दाख़िल हो जाओ और तेरा हक़ है कि हर दरवाज़े से दाख़िल हो यानी रिज़ा के लिहाज़ से भी तू ने जो भी फरायज़ थे सब पूरे कर दिए इस लिए कि औरत को यह नेकियाँ इख़्तियार करने में ख़ुदा तआ़ला यह जज़ा देगा कि जिस तरह चाहे जन्नत में दाख़िल हो। अल्लाह तआ़ला उसे क़ुबूल फरमाएगा।

बुख़ारी में हज़रत इब्न अब्बास (र) की एक रिवायत है कि आहज़रत (स) ने फरमाया मुझे आग दिखायी गयी है तो मैं क्या देखता हूँ कि उस में दाख़िल होने वालों की अकसरियत औरतों की है। इस की वजह यह है कि वह कुफ्र का इरतिकाब करती हैं। अर्ज़ किया गया वह अल्लाह का इंकार करती हैं? आप ने

फरमाया नहीं। वह इहसान फरामोशी की मुरतकिब होती हैं अगर तू उन में से किसी से सारी उम्र इहसान करे और फिर वह तेरी तरफ से कोई बात ख़िलाफ तबीअ़त देखे तो कहती है मैं ने तेरी तरफ़ से कभी कोई भलाई नहीं देखी।
(بخاری کتاب الایمان باب کفران العشیر)

अब यह एक हदीस है जिस से मेरा दिल हमेशा दहल जाता है कि औरतों के पाओं के नीचे जन्नत भी है और औरतें बहुत तक्लीफें उठातें, औलाद को अपने पेट में पालते और हर लिहाज़ से उन के हुक़ूक़ हैं, यहाँ तक कि उन के मुतअ़ल्लिक़ यह भी फरमाया गया है कि उन के पाओं तले जन्नत है बच्चों के लिए। इसके बावजूद जहन्नुम में जो उन की कसरत का ज़िक्र है उस से मेरा दिल दहल जाता है और छोटी सी बात की अगर फिकर करें तो फिर उस बात को वह महसूस कर ले कि मामूली सी नेकी करने से उन को ख़ुदा तआ़ला अज़ाब से बचा लेगा। यह अमूमन कहती है। पता नहीं क्या वजह है कि औरतों की क्या आदत है कि जब नाराज़ हो कोई लड़ाई हो तो ख़ावन्द बेचारे ने सारी उमर भी ख़िदमत की हो वह कहती हैं हम ने तुझसे कोई सुकून नहीं पाया हमेशा तू ने बुराई ही की है हमारी। और सारी उमर के इहसानात वह एक तरफ फैंक देती हैं। यह वह आदत है जिस से तौबा आसान है। इस्तिग़फार करे, ग़ुस्सा आए तो ख़ामोश हो जाया करें और कुछ देर के बाद समझ आजाएगी की खावन्द ने बहुत एहसानात किए हुए हैं और इतनी सी बात से अगर जहन्नुम की आग से बच सकती हैं तो ऐसी नेकी नहीं जो इख़्तियार न की जासकती हो, बहुत भारी और बड़ी नेकी नहीं, बहुत मामूली बात है।

एक हदीस इब्न उमर (र) की बयान करता हूँ। आप (स) ने फरमाया यानी आहज़रत (स) से रिवायत है कि आप (स) ने फरमाया कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक हलाल चीज़ों में से सब से नापसंदीदा चीज़ तलाक़ है।
(سنن ابوداؤد کتاب الطلاق)

अब मैं हज़रत अकदस मसीह मऊद (अ) कि बअ़ज इरशादात आप के सामने रखता हूँ। आप (अ) फरमाते हैंः "मर्द घर का किश्तीबान होता है, अगर वह डूबेगा तो किश्ती भी साथ ही डूबेगी। اَلرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ इसी लिए कहा उस

की रस्तग़ारी के साथ उस की अहल व अयाल की रुस्तगारी है।" (البدر, جلد3, نمبر 27, بتاریخ 12 / جولائی 1904ء صفحہ 4)

यहाँ قَوّامُونَ का ग़लत मतलब बअ़ज मर्द समझते हैं। क़्वाम का मतलब ग़ालिब और तश्द्दुद करने वाला नहीं है। क़्वाम से मतलब है सीधा रखने वाला, अपनी बीवी को सीधा रखना और उस की तरबियत करना यह मर्द का फर्ज़ है। अगर वह ऐसा नहीं करेगा तो अपने फरायिज़ से ग़फलत करने वाला बनेगा। इसलिए हज़रत मसीह मऊद (अ) ने फरमाया "उस की रस्तगारी के साथ उस की अहल की रुस्तगारी है।" अगर वह बद बातों से आज़ाद रहना चाहता है, ग़लत बातों से आज़ाद रहना चाहता है तो ख़ुद साफ बने तो बीवी भी साफ ही बनेगी।

इसी बात की मज़ीद तशरीह करते हुए फरमाते हैं "मर्द चूंके اَلرِّجَالُ قَوّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ का मिसदाक़ है इस लिए अगर वह लअ़नत लेता है तो वह लअ़नत बीवी बच्चों को भी देता है। और अगर बरकत पाता है तो हमसायों और शहर वालों तक को भी देता है।" (الحکم, جلد 6 , نمبر 19, بتاریخ 24 / مئی 1902ء صفحہ 8)

अब यह एक एसा हुक्म है जिसको अमूमन नज़र अंदाज़ कर दिया जाता है। बअ़ज लोग औरतों पर ऐसा रतझते हैं कि वह समझते है कि आज़ादी का उन का हक़ यह है कि उन को दीन की मामलात में खुली छुट्टी देदी जाए और बहुत से अफसरों में यह आदत है कि अपनी बीवियों को बेपर्दा मजालिस में लेके जाते हैं और समझते है कि यह हम ने बीवी पर बड़ा इहसान किया है कि उसको खुली रूख़सत देदी है। यह नाजायिज़ हरकत है और बीवी पर ख़ूब खोल देना चाहिए कि दीन कि मामले में मैं हरगिज़ नरमी नहीं करूँगा लेकिन दुनियावी मामलात में हर आसूदगी दूँगा, हर आसाइश मोहिय्या करूँगा इस लिए ना समझना कि मैं दुनियावी लिहाज़ से चशाम पोशी नहीं कर सकता, वह मैं करता रहूँगा मगर दीन कि मामले में समझलो कि दीन की हुदूद से तजावुज़ करने की इजाज़त मैं तुम्हें नहीं दे सकता।

फिर हज़रत मसीह मौऊ़द (अ) के एक मक़तूब में जो मिया अ़ब्दुल्लाह सनौरी साहिब (र) के नाम एक ख़त था उस का एक इकतिबास है "औरतों के लिए ख़ुदा तआ़ला का वादा है कि अगर वह अपने ख़ाविन्दों की इताअ़त करेगी तो ख़ुदा उन को हर बला से बचावेगा और उन की औलाद उ़मर वाली होगी और नेक बख़्त होगी।" (مکتوبات احمد جلد 5 نمبر 5 صفحہ 207)

फिर मलफ़ूज़ात में दरज हैः "अगरचे आहज़रत (स) की बीवियाँ सब काम कर लिया करती थी। झाड़ू भी दे लिया करती थी और साथ उस के इबादत भी करती थी। चुनांचे एक बीवी ने अपनी हिफ़ाज़त के वासते एक रससा लटका रखता था कि इबादत में ऊँग न आजाए। औरतों के लिए एक टुकड़ा इबादत का ख़ावन्दों का हक़ अदा करना है एक टुकड़ा इबादत का ख़ुदा का शुक्र बजा लाना है।" (ملفوظات جلد ششم صفحہ 53)

फिर फरमाते हैं "औरतों में एक ख़राब आ़दत यह भी है कि वह बात में मरदों की नाफरमानी करती हैं और उन की इजाज़त के बग़ैर उन का माल ख़र्च कर देती हैं और नाराज़ होने की हालत में बहुत कुछ बुरा भला के हक़ में कह देती हैं। ऐसी औरतें अल्लाह तआ़ला और उस की रसूल की नज़दीक लअ़नती हैं।"

हुज़ूर (अ) फरमाते हैंः "वह लअ़नती है।" यह इस लिहाज़ से लअ़नती लफ़्ज़ बहुत सख़्त है मगर बिल्कुल सहीह चस्पा होता है। "उन का नमाज़ रोज़ा और कोई अमल मन्ज़ूर नहीं। अल्लाह तआ़ला साफ फरमाता है कि कोई औरत नेक नहीं हो सकती जब तक पूरी पूरी ख़ावन्द की फरमांबरदारी न करे और दिली मुहब्बत से उस की तअ़जीम न बजा लाए और पस पुश्त उस के लिए उस की ख़ैर ख़्वाह न हो।" यह पस पुश्त की जो ख़ैर ख़्वाही है यह बहुत ही अहम है और उस को नज़र अंदाज़ करने के नतीजे में बहुत औलादें तबाह हो जाती हैं। चुनांचे मुझे एक दफ़ा इस बात का शोक पैदा हुआ पता करें कि बड़े बड़े मुख़्लिस लोगों की औलादें जो फिर गई या मुरतद हो गए क्या वजह थी। तो पेशावर, सूबा सरहद में भी मैं ने तहक़ीक़ की, बंगाल जा के भी तहक़ीक़ की तो हर सूरत में

यह पता चला कि ख़ावन्द जब बाहर होता था तो बीवी अपने बच्चों के कान भरती थी और ख़ावन्द के ख़िलाफ बातें करती रहती थी।

तो ग़ैर हाज़री में ख़ावन्द के हुक़ूक़ अदा करना बहुत ही ज़रूरी है और अगर ग़ैर हाज़री में उस के ख़िलाफ बच्चों के कान में बुरी बातें फूंकी जाएगी तो वह बच्चे बाप के तो बहर हाल नहीं बनेंगे मगर अक्सर माँ के भी नहीं बनते, किसी के भी नहीं रहते। वह यूँहीं एक ऐसे जहाज़ की तरह जिस का कोई सहारा न हो मोड़ने की कोई चीज़ न हो वह तूफानी मोजों में जो गुनाह की तूफानी मौजें हैं उन में बहकते फिरते हैं। इस लिए आहज़रत (स) ने भी बहुत ज़ोर दिया और इसी ज़ोर के नतीजे में हज़रत मसीह मौऊ़द (अ) ने ज़ोर दिया है कि ख़ावन्द की ग़ैर मौजूदगी में कोई ऐसी बात न करो जिस से तुम्हारी औलाद तबाह हो जाए।

फिर बअ़ज़ दफा कहते हैं औरतों से तो कोई पर्दा नहीं। हर क़िसम की औरत घर में आसकती हैं मगर हज़रत मसीह मौऊद (अ) इस बारे में बहुत ही अहम ताकीद करते हैं "औरतों पर भी लाज़िम है कि बदकार और बदवज़ औरतों को अपने घरों में ना आने दें और ना उन को अपनी ख़िदमत में रखे।" बदकार नौकरानियाँ अपनी ख़िदमत में न रखे वरना उस के बहुत बुरे नतीजे निकल सकते हैं तो वह बाद में उस वक़त पछताएगी जब वक़्त हाथ से निकल चुका होगा। "क्योंकि यह सख़्त गुनाह की बात है कि बदकार औरत नेक औरत की हम सोहबत हो।"
(ملفوظات جلد پنجم جدید ای□شن صفح□ ۴۷، ۴۸)

"क़ुरआन शरीफ में यह हुक्म है कि अगर मर्द अपनी औरत को मुरव्वत और एहसान की रू से एक पहाड़ सौने का भी दे तो त़लाक की हालत में वापस ना ले। इस से ज़ाहिर है कि इसलाम में औरतों की किस क़दर की इज्ज़त की गई है। एक त़ौर से तो मरदों को औरतों का नौकर टहराया गया है। और बहर हाल मरदों के लिए क़ुरआन शरीफ में यह हुक्म है कि यानी तुम अपनी औरतों से ऐसे हुस्न-ए-सुलूक से मआ़शरत करो कि हर एक अकलमन्द मालूम कर सके कि तुम अपनी बीवी से एहसान और मुरव्वत से पेश आते हो।" (چشم□ معرفت، روحانی خزانن جلد ۲۳، صفح□ ۲۸۸)

इस ज़िम्न में जो औरतों की आज़ादी की मूवमंटस (Movements) हैं उन की तरफ से कई सवालों की मजलिस में, जब मुझ से सवाल होता है तो मैं उन को समझाता हूँ कि यह एक फितरी तक़ाज़ा है कि मर्द ज़्यादा ताक़तवर है और औरत कमज़ोर है। औरत नाज़ुक है और मर्द की सकीनत और औरत की सकीनत दोनों के लिए, यह बात ज़रूरी थी, तो बराबरी तुम कैसे मानोगी। क्या कभी बाक्सिंग (Boxing) में भी बराबरी हो सकती है कि एक तरफ़ औरत हो और दूसरी तरफ मर्द बाक्सर हो? क्या दौडों में भी तुम बराबरी रखते हो मरदों और औरतों की दौड़ इक्ट्टी करवाते हो? क्या दूसरी खेलों में औरतों और मर्दों की खेलें अलग अलग नहीं होती? तो दिल से तसलीम करते हो कि मरदों को ख़ुदा ने मज़बूती क़वा दिए हैं और औरतें हर चीज़ में महज़ फर्ज़ी तौर पर बराबरी नहीं कर सकतीं तो जब तुम तक़्सीम कर रहे हो तो फिर ख़ुदा तआ़ला की इस बात को मानने में तुम्हें क्या ह़रज है कि औरतों और मरदों के क़वा का फरक़ है और इस पहलू से, मुनासिब हाल ज़िम्मेदारियाँ उन को सिपुरद करनी चाहिएँ।

अब हज़रत नवाब मुबारका बीग़म साहिबा (र) को हज़रत उम्मुल मुअमिनीन (र) ने जो नसायिह फरमायी थीं उन में से कुछ हज़रत नवाब मुबारका बीगम साहिबा के अलफाज़ में मैं आप के सामने पेश करता हूँ। "मुझे जो शादी के अय्याम में आप ने चंद नसायिह की थीं वह भी तहरीर कर देना मेरे ख़याल में मुफीद होगा। फरमाया अपने शोहर से पोशीदा कोई काम किस को उन से छिपाने की ज़रूरत समझो हरगिज़ कभी नहीं करना।" अगर कोई काम छिपाने की ज़रूरत है तो न करो, वही पहचान है इस बात की कि यह नाजायिज़ बात है। "शौहर न देखे मगर ख़ुदा तो देखता है और बात आख़िर ज़ाहिर होकर औरत की वक़अत को खो देती है। अगर कोई काम उन की मर्ज़ी के ख़िलाफ सरज़द हो जाए तो हरगिज़ कभी न छिपाना, साफ कह देना क्योंकि उस में इज्ज़त है और छिपाने में आख़िर बेइज्ज़ती और बेवक़री का सामना है।

"कभी उन के ग़ुस्से के वक़्त न बोलना।" इस से पहले जो ज़िक्र है कि औरतें ग़ुस्से के वक़्त में कह देती हैं हम पर कोई एहसान नहीं किया और सारी उमर ज़ुल्म किया है। यह ग़ुस्से की हालत में बोलने का नतीजा है। तब इस बदी से

बचने का बेहतर ज़रिया हज़रत अम्मा जान (र) यह बयान करती हैं - "कभी उन के ग़ुस्से के वक़्त न बोलना। तुम पर या किसी नौकर या बच्चे पर ख़फा हो और तुम को इल्म हो कि उस वक़्त यह हक़ पर नहीं हैं तब भी उस वक़्त न बोलना। ग़ुस्सा थम जाने पर फिर आहिस्तगी से, हक़ और उन का ग़ल्ती पर होना उन को समझा देना। ग़ुस्से में मर्द से बहस करने वाली औरत की इज्ज़त बाक़ी नहीं रहती। अगर ग़ुस्से में कुछ सख़्त कह दें तो कितनी हतक का मूजिब हो। उन के अजीज़ों को, अजीज़ों की औलाद को अपना जानना। किसी की बुराई न सोचना ख़्वाह तुम से कोई बुराई करे। तुम दिल में भी सब का भलाई चाहना और अमल से भी बदी का बदला न करना। देखना फिर हमेशा ख़ुदा तुम्हारी भला करेगा।"

2- निकाह का ईलान

3 - दुआ